पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class –IX

HINDI

JULY & AUGUST -MONTH

SYLLABUS

2020

Chapters:-

Ch-4-Tum kb jaoge Aatithi

Ch-5-Vaigyanik chetna ke vahak

Ch-13-Geet-Ageet

Ch-2-Smriti –(Sanchyan)

Ch-3-kallu kumhaar –(Sanchyan)

गद्य-भाग

पाठ-4

(तुम कब जाओगे ,अतिथि)

(शरद जोशी)

*-लेखक का परिचय:-हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 को उज्जैन, मध्यप्रदेश में हुआ था। शरद जोशी ने मध्य प्रदेश सरकार के सूचना एवं प्रकाशन विभाग में काम किया लेकिन अपने लेखन के कारण इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और लेखन को ही पूरी तरह से अपना लिया। आपने इन्दौर में रहते हुए समाचारपत्रों और रेडियो के लिए लेखन किया।

***-पाठ का सार:-**तुम्हारे आने के चौथे दिन, बार-बार यह प्रश्न मेरे मन में उमड़ रहा है, तुम कब जाओगे अतिथि! तुम कब घर से निकलोगे मेरे मेहमान!

तुम जिस सोफ़े पर टांगें पसारे बैठे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर लगा है, जिसकी फड़फड़ाती तारीख़ें मैं तुम्हें रोज़ दिखा कर बदल रहा हूं. यह मेहमांनवाज़ी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई संभावना नज़र नहीं आती. लाखों मील लंबी यात्रा कर एस्ट्रॉनॉट्स भी चांद पर इतने नहीं रुके जितने तुम रुके. उन्होने भी चांद की इतनी मिट्टी नहीं खोदी जितनी तुम मेरी खोद चुके हो. क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता? क्या तुम्हें तुम्हारी मिट्टी नहीं पुकारती?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अंदर ही अंदर मेरा बटुआ कांप उठा था. फिर भी मैं मुस्कराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला. मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया. तुम्हारी शान में ओ मेहमान, हमने दोपहर के भोजन को लंच में बदला और रात के खाने को डिनर में. हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयां मंगवाईं. इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमांनवाज़ी की छाप लिए तुम रेल के डिब्बे में बैठ जाओगे. मगर, आज चौथा दिन है और तुम यहीं हो. कल रात हमने खिचड़ी बनाई, फिर भी तुम यहीं हो. आज हम उपवास करेंगे और तुम यहीं हो. तुम्हारी उपस्थिति यूं रबर की तरह खिंचेगी, हमने कभी सोचा न था सुबह तुम आए और बोले,''लॉन्ड्री को कपड़े देने हैं.'' मतलब? मतलब यह कि जब तक कपड़े धुल कर नहीं आएंगे, तुम नहीं जाओगे? यह चोट मार्मिक थी, यह आघात अप्रत्याशित था. मैंने पहली बार जाना कि अतिथि केवल देवता नहीं होता. वह मनुष्य और कई बार राक्षस भी हो सकता है. यह देख मेरी पत्नी की आंखें बड़ी-बड़ी हो गईं. तुम शायद नहीं जानते कि पत्नी की आंखें जब बड़ी-बड़ी होती हैं, मेरा दिल छोटा-छोटा होने लगता है.

कपड़े धुल कर आ गए और तुम यहीं हो. पलंग की चादर दो बार बदली जा चुकी और तुम यहीं हो. अब इस कमरे के आकाश में ठहाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते. शब्दों का लेन-देन

मिट गया. अब करने को चर्चा नहीं रही. परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति, रिश्तेदारी, पुराने दोस्त, फ़िल्म, साहित्य. यहां तक कि आंख मार-मार कर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया. सारे विषय ख़त्म. तुम्हारे प्रति मेरी प्रेमभावना गाली में बदल रही है. मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम कौन-सा फ़ेविकोल लगा कर मेरे घर में आए हो?

पत्नी पूछती है,''कब तक रहेंगे ये?'' जवाब में मैं कंधे उचका देता हूं. जब वह प्रश्न पूछती है, मैं उत्तर नहीं दे पाता. जब मैं पूछता हूं, वो चुप रह जाती है. तुम्हारा बिस्तर कब गोल होगा अतिथि?

मैं जानता हूं कि तुम्हें मेरे घर में अच्छा लग रहा है. सबको दूसरों के घर में अच्छा लगता है. यदि लोगों का बस चलता तो वे किसी और के घर में रहते. किसी दूसरे की पत्नी से विवाह करते. मगर घर को सुंदर और होम को स्वीट होम इसीलिए कहा गया है कि मेहमान अपने घर वापिस लौट जाएं.

मेरी रातों को अपने खर्राटों से गुंजाने के बाद अब चले जाओ मेरे दोस्त! देखो, शराफ़त की भी एक सीमा होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है जो बोला जा सकता है.

कल का सूरज तुम्हारे आगमन का चौथा सूरज होगा. और वह मेरी सहनशीलता की अंतिम सुबह होगी. उसके बाद मैं लड़खड़ा जाऊंगा. यह सच है कि अतिथि होने के नाते तुम देवता हो, मगर मैं भी आख़िर मनुष्य हूं. एक मनुष्य ज़्यादा दिनों देवता के साथ नहीं रह सकता. देवता का काम है कि वह दर्शन दे और लौट जाए. तुम लौट जाओ अतिथि. इसके पूर्व कि मैं अपनी वाली पर उतरूं, तुम लौट जाओ.

उफ़! तुम कब जाओगे, अतिथि!

***-शब्दार्थ:-**

1-आगमन -आना	2-निस्संk0च -बिना संकोच के
3-सतत-लगातार	4-आतिथ्य-आवभगत,सत्कार
5-अन्तरंग-गहरा	6-आशंका-खतरा
7-मेहमाननवाजी-सत्कार	8-छोर-किनारा
9-भावभीनी-प्रेमभरी	10-आघात-चोट,प्रहार
11-अप्रत्याशित-अनसोचा	12-मार्मिक-मन को छूनेवाला
13-सामीप्य-निकटता	14-औपचारिक-दिखावटी
15-निर्मूल-बिना जड का	16-किंलो-कोनों से
17-सौहार्द-सरल भाव से	18-ऊष्मा-उग्रता ,गर्मी

Þ-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए –

1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

1-अतिथि लेखक के घर चार दिनों से अधिक समय तक रहता है।

2. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं?

2-कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही थी।

3. पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

3-पति ने स्नेह से भीगी मुस्कान के साथ गले मिलकर और पत्नी ने आदर से नमस्ते करके उनका स्वागत किया।

4. दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

4-दोपहर के भोजन को लंच की तरह शानदार बनाकर लंच की गरिमा प्रदान की गई।

5. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

5-तीसरे दिन अतिथि ने कपड़े धुलवाने हैं कहकर धोबी के बारे में पूछा।

6. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

6-सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लंच डिनर की जगह खिचड़ी बनने लगी। खाने में सादगी आ गई और अब भी अतिथि नहीं जाता तो उपवास तक रखना पड़ सकता था।

ठहाकों के गुब्बारों की जगह एक चुप्पी हो गई।सौहार्द अब धीरे-धीरे बोरियत में बदलने लगा ।

7-**लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?**

7-लेखक अतिथि को एक भावभीनी विदाई देना चाहता था। वह चाहता था कि जब अतिथि जाए तो पति-पत्नी उसे स्टेशन तक छोड़ने जाए। उन्हें सम्मानजनक विदाई देना चाहते थे परंतु उनकी यह मनोकामना पूर्ण नहीं हो पाई।

***-व्याख्या कीजिए–**

1-**अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया, व्याख्या कीजिए –**

1-जब लेखक ने अनचाहे अतिथि को आते देखा तो उसे महसूस हुआ कि खर्च बढ़ जाएगा। इसी को बटुआ काँपना कहते हैं।

2-अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

2-अतिथि जब आता है तो देवता जैसा प्रतीत होता है। अतिथि जब बहुत दिनों तक किसी के घर ठहर जाता है तो 'अतिथि देवो भव' का मूल्य नगण्य हो जाता है। आने के एक दिन बाद वह सामान्य हो जाता है अर्थात् इतना बुरा भी नहीं लगता इसलिए इसे मानव रुप में कहा है और ज़्यादा दिन रह जाए तो राक्षस जैसा प्रतीत होता है अर्थात् बुरा लगने लगता है।

3-लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।

3-हर व्यक्ति अपने घर में सुख-शांति बनाए रखना चाहता है। अपने घर को स्वीट होम बनाए रखना चाहता है परन्तु अनचाहा अतिथि आकर उसकी इस मिठास को खत्म कर देता है। असुविधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। उनका आचरण दूसरों के जीवन को उथल-पुथल कर देता है। यह दूसरों के घर की सरसता कम करने का कारण बन जाते हैं।

4-मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

4- अतिथि यदि एक दो दिन ठहरे तो उसका आदर सत्कार होता हैं परंतु अधिक ठहरे तो वह देवत्व को खोकर राक्षसत्व का बोध कराने लगता है। अतिथि चार दिन से लेखक के घर रह रहा था। कल पाँचवा दिन हो जाएगा। यदि कल भी अतिथि नहीं गया तो लेखक अपनी सहनशीलता खो बैठेगा और अतिथि सत्कार भूलकर कुछ गलत न बोल दे।

5- एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

5-यदि अतिथि को देवता माना जाए तो वह मनुष्य के साथ ज़्यादा नहीं रह सकता। दोनों को सामान्य मनुष्य बनना पड़ेगा। देवता की पूजा की जाती है। देवता तो थोड़ी देर के लिए दर्शन देकर चले जाते हैं क्योंकि देवता यदि अधिक समय तक ठहरे तो उसका देवत्व समाप्त हो जाएगा।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए –

1-कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर:- जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। लेखक ने उसके साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए। सौहार्द व्यवहार अब बोरियत में बदल गया। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था। इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की तैयारी करने लगा। लेखक अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने के लिए तैयार हो गया।

2-'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना' – इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर:- 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुज़रना' – इस पंक्ति का आशय है संबंधों में परिवर्तन आना। जो संबंध आत्मीयतापूर्ण थे अब घृणा और तिरस्कार में बदलने लगे। जब लेखक के घर अतिथि आया था तो उसके संबंध सौहार्द पूर्ण थे। उसने उसका स्वागत प्रसन्नता पूर्वक किया था। लेखक ने अपनी ढ़ीली-ढ़ाली आर्थिक स्थिति के बाद भी उसे शानदार डिनर खिलाया और सिनेमा दिखाया। लेकिन अतिथि चार पाँच दिन रुक गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था।

3-जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर:- जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। लेखक ने उसके साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए। सौहार्द व्यवहार अब बोरियत में बदल गया। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था। इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की तैयारी करने लगा। लेखक अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने के लिए तैयार हो गया।

(व्याकरण)

***-निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए –**

(क) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)

(क)हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।

(ख) किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं,जल्दी धुल जाएँगे। (प्रश्नवाचक वाक्य)

(ख) किसी लॉण्ड्री पर दे देने से क्या जल्दी धुल जाएँगे?

(ग) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। (भविष्यत् काल)

(ग) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाएगी।

(घ) इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक प्रश्नवाची)

(घ) इनके कपड़े यहाँ देने हैं।

(ङ) कब तक टिकेंगे ये? (नकारात्मक)

(ङ) ये अब नहीं टिकेंगे।

*-पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए –

(क) तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके।

(ख) तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।

(ग) आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।

(घ) शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।

(ङ) तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

उत्तर:- पाठ में आए इन वाक्यों में 'चुकना' क्रिया के विभिन्न प्रयोगों को ध्यान से देखिए और वाक्य संरचना को समझिए –

(क) तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर चुके।

(ख) तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके।

(ग) आदर-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे।

(घ) शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए।

(ङ) तुम्हारे भारी-भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो।

*-निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए –

(क) लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।

(ख) तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।

(ग) तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।

(घ) कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।

(ङ) भावनाएँ गलियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

उत्तर:- निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए –

(क) लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।

(ख) तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।

(ग) तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।
(घ) कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।
(ङ) भावनाएँ गलियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।

गद्य-भाग

पाठ-5

(वैज्ञानिक चेतना के वाहक)

(धिरंजन मालवे)

***-परिचय और सार :-**सी. वी. रमन ने जिस दौर में अपनी खोज की थी उस समय काफी बड़े और पुराने किस्म के यंत्र हुआ करते थे. रमन ने रमन प्रभाव की खोज इन्हीं यंत्रों की मदद से की थी. आज रमन प्रभाव ने ही तकनीक को पूरी तरह बदल दिया है. अब हर क्षेत्र के वैज्ञानिक रमन प्रभाव के सहारे कई तरह के प्रयोग कर रहे हैं.एक शिक्षार्थी के रूप में भी रमन ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए थे. वर्ष 1906 में रमन का प्रकाश विवर्तन (डिफ्रेक्शन) पर पहला शोध पत्र लंदन की फिलोसोफिकल पत्रिका में प्रकाशित हुआ था.

ब्रिटिश शासन के दौर में भारत में किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए भी वैज्ञानिक बनना आसान नहीं था. कालेज के बाद रमन ने भारत सरकार के वित्त विभाग की एक प्रतियोगिता में हिस्सा लिया. इसमें वे प्रथम आए और फिर उन्हें जून 1907 में असिस्टेंट एकाउटेंट जनरल बनाकर कलकत्ता भेज दिया गया. एक दिन वे अपने कार्यालय से लौट रहे थे कि उन्होंने एक साइन-बोर्ड देखा - इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस. इसे देख उनके अंदर की वैज्ञानिक इच्छा जाग गई. रमन के अंशकालिक अनुसंधान का क्षेत्र 'ध्वनि के कंपन और कार्यों का सिद्धांत' था. रमन का वाद्य-यंत्रों की भौतिकी का ज्ञान इतना गहरा था कि 1927 में जर्मनी में छपे बीस खंडों वाले भौतिकी विश्वकोश के आठवें खंड का लेख रमन से ही तैयार कराया गया था. इस कोश को तैयार करने वालों में रमन ही ऐसे थे, जो जर्मनी के नहीं थे.1917 में पहली बार कलकत्ता विश्वविद्यालय में फिजिक्स के प्रोफेसर का चयन होना था. वहां के कुलपति आशुतोष मुखर्जी ने इसके लिए सीवी रमन को आमंत्रित किया. रमन ने उनका निमंत्रण स्वीकार करके एक बड़े सरकारी पद से इस्तीफा दे दिया. इसके बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय में ही रमन ने कुछ वर्षों तक वस्तुओं में प्रकाश के चलने का अध्ययन किया.वर्ष 1921 में विश्वविद्यालयों की कांग्रेस में रमन भारत के प्रतिनिधि बनकर ऑक्सफोर्ड गए. जब रमन जलयान से स्वदेश लौट रहे थे तो उन्होंने भूमध्य सागर के जल का अनोखा नीला व दूधियापन देखा. इसे देखकर उन्हें बड़ा अचरज हुआ. कलकत्ता विश्वविद्यालय पहुंचकर उन्होंने निर्जीव वस्तुओं में प्रकाश के बिखरने का नियमित अध्ययन शुरू किया. लगभग सात वर्ष बाद रमन अपनी उस खोज पर पहुंचे, जिसे 'रमन प्रभाव' के नाम से जाना जाता है.रमन ने 29 फरवरी, 1928 को रमन प्रभाव की खोज की घोषणा की थी. यही कारण है कि इस दिन को भारत में प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है.

⁎-शब्दार्थ:-

1-नील वर्णीय-नील रंग का
2-असंख्य-अनगिनत
3-आभा-चमक
4-जिज्ञासा-जानने की इच्छा
5-विश्वविख्यात-विश्व में प्रसिद्ध
6-अतिश्योक्ति-किसी बात को बड़ा करके बोलना
7-हासिल-प्राप्त
8-शोध कार्य-खोजना
9-रूझान-झुकाव ,मत
10-उपकरण-औजार
11-भ्रान्ति-संदेह
12-सृजित-रचा हुआ
13-अद्यापन-पढ़ाना
14-परिणति-परिणाम
15-ठोस रवे-बिल्लौर
16-फोटान-प्रकाश का अंश
17-ऊर्जा-बल
18-तीव्रता-तेज धारा
19-आणविक-अनु का
20-परमाणविक-परमाणु का
21-संरचना-बनावट
22-संश्लेषण-मिलान करना
23-कृत्रिम-बनावटी
25-अक्षुण-बिना टूटे
26-कट्टर-दृढ
२७-परिहास-हंसी-मजाक

⁎-प्रश्न-उत्तर :-

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर एक–दो पंक्तियों में दीजिए –

1-रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा और क्या थे?

1-रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा एक सुयोग्य वैज्ञानिक एवं अनुसंधानकर्ता थे।

2-समुद्र को देखकर रामन् के मन में कौन-सी दो जिज्ञासाएँ उठीं?

2-समुद्र को देखकर रामन् के मन में दो जिज्ञासाएँ उठीं –

1. समुद्र के पानी का रंग नीला ही क्यों होता है?
2. वह रंग कोई और क्यों नहीं होता है?

3-रामन् के पिता ने उनमें किन विषयों की सशक्त नींव डाली?

3-रामन् के पिता ने उनमें गणित और भौतिकी की सशक्त नींव डाली।

4-वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के अध्ययन के द्वारा रामन् क्या करना चाहते थे?

4-रामन् वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के द्वारा उनके कंपन के पीछे छिपे रहस्य की परतें खोलना चाहते थे।

5-सरकारी नौकरी छोड़ने के पीछे रामन् की क्या भावना थी?

5-सरकारी नौकरी छोड़ने के पीछे रामन् की भावना थी कि वह पढ़ाई करके विश्वविद्यालय के शिक्षक बनकर, अध्ययन अध्यापन और शोध कार्यों में अपना पूरा समय लगाना चाहते थे।

6- 'रामन् प्रभाव' की खोज के पीछे कौन-सा सवाल हिलोरें ले रहा था?

6-रामन् का सवाल थी कि आखिर समुद्र के पानी का रंग नीला ही क्यों है? इसके लिए उन्होंने तरल पदार्थ पर प्रकाश की किरणों का अध्ययन किया।

7-प्रकाश तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने क्या बताया?

7-प्रकाश तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने बताया था कि प्रकाश अति सूक्ष्म कणों की तीव्र धारा के समान है। उन्होंने इन कणों की तुलना बुलेट से की और इन्हें फोटॉन नाम दिया।

8-रामन् की खोज ने किन अध्ययनों को सहज बनाया?

8-रामन् की खोज ने पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं के बारे में खोज के अध्ययन को सहज बनाया।

उपयुक्त शब्द का चयन करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी, इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ़ साइंस, फिलॉसॉफिकल मैगज़ीन, भौतिकी, रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट_

1. रामन् का पहला शोध पत्र ..... में प्रकाशित हुआ था।

2. रामन् की खोज ..... के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी।

3. कलकत्ता की मामूली-सी प्रयोगशाला का नाम ..... था।

4. रामन् द्वारा स्थापित शोध संस्थान ..... नाम से जानी जाती है।

5. पहले पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन करने के लिए ..... का सहारा लिया जाता था।

1. रामन् का पहला शोध पत्र फिलॉसॉफिकल मैगज़ीन में प्रकाशित हुआ था।
2. रामन् की खोज भौतिकी के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी।
3. कलकत्ता की मामूली-सी प्रयोगशाला का नाम इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ़ साइंस था।
4. रामन् द्वारा स्थापित शोध संस्थान रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट नाम से जानी जाती है।
5. पहले पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन करने के लिए इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाता था।

***-निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –**

1-उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थी।

1-डॉ. रामन् सरकारी सुख-सुविधाओं का त्याग करके भी सरस्वती अर्थात शिक्षा पाने और देने के काम को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे और उन्होंने यही किया भी।

2-यह अपने आपमें एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था।

2-डॉ. रामन् किसी न किसी प्रकार अपना कार्य सिद्ध कर लेते थे। वे हठ की स्थिति तक चले जाते थे। योग साधना हठ का अंश रहता है। रामन् मामूली उपकरणों से भी अपनी प्रयोगशाला का काम चला लेते थे। यह एक प्रकार का हठयोग ही था।

3-रामन् के प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है?

3--रामन् के समय में शोधकार्य करने के लिए परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत थीं। वे सरकारी नौकरी करते थे, समय का अभाव रहता था। परन्तु फिर भी रामन् फुर्सत पाते ही 'बहू बाज़ार' चले जाते। वहाँ 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस' की प्रयोगशाला में काम करते। इस प्रयोगशाला में साधनों का अभाव था लेकिन रामन् इन काम चलाऊ उपकरणों से भी शोध कार्य करते रहें। ऐसे में अपनी इच्छाशक्ति के बलबूते पर अपना शोधकार्य करना आधुनिक हठयोग ही कहा जा सकता है।

4-कॉलेज के दिनों में रामन् की दिली इच्छा क्या थी?

4-कॉलेज के दिनों में रामन् की दिली इच्छा थी कि वे नए-नए वैज्ञानिक प्रयोग करें, पूरा जीवन शोधकार्यों में लगा दें। उनका मन और दिमाग विज्ञान के रहस्यों को सुलझाने के लिए बैचेन रहता था। उनका पहला शोधपत्र फिलॉसॉफिकल मैग़जीन में प्रकाशित हुआ।

5-हमारे पास ऐसी न जाने कितनी ही चीज़ें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं।

5-हमारे आस-पास के वातावरण में अनेक प्रकार की चीज़ें बिखरी होती हैं। उन्हें सही ढंग से सँवारने वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है। वही उनको नया रुप देता है।

6-वाद्ययंत्रों पर की गई खोजों से रामन् ने कौन-सी भ्रांति तोड़ने की कोशिश की?

6-रामन् ने देशी और विदेशी दोनों प्रकार के वाद्ययंत्रों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के द्वारा वे पश्चिमी देशों की भ्रांति को तोड़ना चाहते थे कि भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्ययंत्रों की तुलना में घटिया है।

7-रामन् की खोज 'रामन् प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

7-रामन् के मस्तिष्क में समुद्र के नीले रंग को लेकर जो सवाल 1921 की समुद्र यात्रा के समय आया, वह ही 'रामन् प्रभाव' खोज बन गया। अर्थात रामन् द्वारा खोजा गया सिद्धांत, इसमें जब एक वर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो उसके वर्ण में परिवर्तन आ जाता है। एक वर्णीय प्रकाश की किरण के फोटॉन जब तरल ठोस रवे से टकराते हैं तो उर्जा का कुछ अंश खो देते हैं या पा लेते हैं दोनों स्थितियों में रंग में बदलाव आता है।

8-रामन् के लिए नौकरी संबंधी कौन-सा निर्णय कठिन था?

8-रामन् भारत सरकार के वित्त विभाग में अफसर थे। परन्तु एक दिन प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री सर आशुतोष मुखर्जी ने रामन् से नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद लेने के लिए आग्रह किया। इस बारे में निर्णय लेना उनके लिए अत्यंत कठिन हो गया क्योंकि सरकारी नौकरी की बहुत अच्छी तनख्वाह अनेकों सुविधाएँ छोड़कर कम वेतन, कम सुविधाओं वाली नौकरी का फैसला मुश्किल था। परन्तु रामन् ने सरकारी नौकरी छोड़कर विश्वविद्यालय की नौकरी कर ली क्योंकि सरस्वती की साधना उनके लिए महत्वपूर्ण थी।

9- 'रामन् प्रभाव' की खोज से विज्ञान के क्षेत्र में कौन-कौन से कार्य संभव हो सके?

9- 'रामन् प्रभाव' की खोज से विज्ञान के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य संभव हो सके –

1. विभिन्न पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया।

2. रामन् की खोज के बाद पदार्थों की आणविक और परमाणविक संरचना के अध्ययन के लिए रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाने लगा।

3. रामन् की तकनीक एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक जानकारी देने लगी।

4. अब पदार्थों का संश्लेषण प्रयोगशाला में करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का कृत्रिम रुप में निर्माण संभव हो गया।

10-सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् को समय-समय पर किन-किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

10-सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् को समय-समय पर निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया|

1. 1924 में 'रॉयल सोसायटी' की सदस्यता प्रदान की गई।

2. 1929 में उन्हें 'सर' की उपाधि दी गई।

3. 1930 में विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार 'नोबल पुरस्कार' प्रदान किया गया।

4. रॉयल सोसायटी का ह्यूज पदक प्रदान किया गया।

5. फ़िलोडेल्फ़िया इंस्टीट्यूट का 'फ्रेंकलिन पदक' मिला।

6. सोवियत संघ का अंतर्राष्ट्रीय 'लेनिऩ पुरस्कार मिला।

7. 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

11-देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालिए।

11-सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर वैज्ञानिक कार्यों के लिए जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने रामन् प्रभाव की खोज कर नोबल पुरस्कार प्राप्त किया। बंगलोर में शोध संस्थान

की स्थापना की, इसे रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट के नाम से जाना जाता है। भौतिक शास्त्र में अनुसंधान के लिए इंडियन जनरल ऑफ फिजिक्स नामक शोद पत्रिका आरंभ की, करेंट साइंस नामक पत्रिका भी शुरु की, प्रकृति में छिपे रहस्यों का पता लगाया।

12-सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के जीवन से प्राप्त होने वाले संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

12-सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के जीवन से हमें सदैव आगे बढ़ते रहने का संदेश मिलाता है। व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना चाहिए। भले ही इसके लिए रामन् की तरह सुख-सुविधाओं को छोड़ना पड़े। इच्छा शक्ति हो तो राह निकल आती है। रामन् ने संदेश दिया है कि हमें अपने आसपास घट रही विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टि से करनी चाहिए।

13-रामन् को मिलनेवाले पुरस्कारों ने भारतीय-चेतना को जाग्रत किया। ऐसा क्यों कहा गया है?

13रामन् को समय पर मिलने वाले पुरस्कारों ने भारतीय-चेतना को जाग्रत किया। इनमें से अधिकाँश पुरस्कार विदेशी थे और प्रतिष्ठित भी। अंग्रेज़ों की गुलामी के दौर में एक भारतीय वैज्ञानिक को इतना सम्मानित दिए जाने से भारत को आत्मविश्वास और आत्मसम्मान मिला। इसके लिए भारतवासी स्वयं को गौरवशाली अनुभव करने लगे।

पद्य-भाग

पाठ-13

(दिनकर) (गीत-अगीत)

रामधारी सिंह 'दिनकर' (जीवन परिचय) हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों में से एक राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को सिमरिया नामक स्थान पे हुआ। इनकी मृत्यु 24 अप्रैल, 1974 को चेन्नई) में हुई । ... में सिमरिया, ज़िला मुंगेर (बिहार) में एक सामान्य किसान रवि सिंह तथा उनकी पत्नी मन रूप देवी के पुत्र के रूप में हुआ था।

***-भावार्थ:-**

1-गाकर गीत विरह के तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हलका कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता,
"देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता

गा-गाकर बह रही निर्झरी,
पाटल मूक खड़ा तट पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत अगीत भावार्थ : रामधारी सिंह दिनकर जी की कविता गीत अगीत की इन पंक्तियों में कवि ने जंगलों एवं पहाड़ों के बीच बहती हुई एक नदी का बड़ा ही आकर्षक वर्णन किया है। उन्होंने कहा है कि विरह अर्थात बिछड़ने का गीत गाती हुई नदी, अपने मार्ग में बड़ी तेजी से बहती जाती है।अपने दिल से विरह का बोझ हल्का करने के लिए नदी, अपने किनारों पर उगी घास व उपलों से बात करते हुए आगे बढ़ती चली जा रही है। वहीँ दूसरी ओर, नदी के किनारे तट पर उगा हुआ एक गुलाब का फूल यह सोच रहा है कि अगर भगवान उसे भी बोलने की शक्ति देता, तो वह भी गा-गा कर सारे जगत को अपने पतझड़ के सपनों का गीत सुनाता।तो इस प्रकार, जहाँ एक ओर नदी अपनी विरह के गीत गाते हुए, कल-कल की आवाज़ करते हुए बह रही है, वहीँ दूसरी ओर, गुलाब का पौधा चुपचाप अपने गीत को अपने मन में दबाये किनारे पर खड़ा हुआ नदी को बहते देख रहा है।

2-बैठा शुक उस घनी डाल पर
जो खोंते को छाया देती।
पंख फुला नीचे खोंते में
शुकी बैठ अंडे है सेती।

गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर।
किंतु, शुकी के गीत उमड़कर
रह जाते सनेह में सनकर।
गूँज रहा शुक का स्वर वन में,
फूला मग्न शुकी का पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत अगीत भावार्थ : खेतों में एक घने वृक्ष पर तोता बैठा हुआ है और उसी वृक्ष की छांव में उसका घोंसला है। जिसमें मैना बड़े प्यार से अपने पंखों को फैलाये अंडे से रही है। ऊपर पेड़ की डाल पर तोता बैठा हुआ है, जिसके ऊपर पेड़ के पत्तों से छनकर सूर्य की किरणें पड़ रही हैं।वह गाते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो सूर्य की किरणों को शब्द प्रदान कर रहा हो। पूरा का पूरा खेत तोते के स्वर से गूंज उठता है। जिसे सुनकर मैना भी गाने को उमड़ पड़ती है, परन्तु उसके स्वर बाहर नहीं निकल पाते और वह चुप रहकर ही पंख फैलाते हुए अपनी ख़ुशी का इज़हार करती है।

3-दो प्रेमी हैं यहाँ, एक जब
बड़े साँझ आल्हा गाता है,
पहला स्वर उसकी राधा को
घर से यहीं खींच लाता है।
चोरी-चोरी खड़ी नीम की
छाया में छिपकर सुनती है,
हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना', यों मन में गुनती है।
वह गाता, पर किसी वेग से
फूल रहा इसका अंतर है।
गीत, अगीत कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत अगीत भावार्थ : रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत-अगीत की इन पंक्तियों में कवि ने दो प्रेमियों का वर्णन किया है। एक प्रेमी जब शाम के समय अपनी प्रेमिका को बुलाने के लिए गीत गाता है, तो वो उसके स्वर को सुनकर खिंची चली आती है और पेड़ों के पीछे छुपकर चुपचाप अपने प्रेमी को गाते हुए सुनती है। वह सोचती है कि मैं इस गाने का हिस्सा क्यों नहीं हूँ। नीम के पेड़ों के नीचे अपने प्रेमी के गीत को सुनकर उसका हृदय फूला नहीं समाता। वह चुपचाप अपने प्रेमी के गीत का आनंद लेती रहती है।इस प्रकार जहाँ एक ओर प्रेमी गीत गाकर अपनी सुंदरता का बखान कर रहा है, वहीँ दूसरी ओर, चुप रहकर भी प्रेमिका उतने ही प्रभावशाली रूप से अपने प्यार को व्यक्त कर रही है। इसलिए उसका अगीत भी किसी मधुर गीत से कम नहीं है।

***-शब्दार्थ :-**

-अतिरिक्त —के अलावा
- चित्रण -वर्णन
- निमग्न -खो जाना
-दरअसल —वास्तव में
-दुविधा —समस्या
-महज़ —केवल
-तटिनी - नदी, तटों के बीच बहती हुई
-वेगवती - तेज़ गति से
-उपलों - किनारों से
-विधाता - ईश्वर
-निर्झरी - झरना, नदी
-पाटल - गुलाब
-शुक - तोता
-खोंते - घोंसला
-पर्ण - पत्ता, पंख
-शुकी - मादा तोता
-आल्हा - एक लोक—काव्य का नाम
-कड़ी - वे छंद जो गीत को जोड़ते हैं
-बिधना - भाग्य, विधाता
-गुनती - विचार करती है
-वेग - गति

***-प्रश्न-उत्तर:-**

(क) नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर: "देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।"

-संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए –

1. अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता

उत्तर:- संदर्भ – प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग – 1 में संकलित कविता 'गीत-अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी सिंह दिनकर है।

व्याख्या – नदी के तट पर खड़ा गुलाब सोचता है कि यदि विधाता उसे भी स्वर देते तो वह भी अपने पतझर की व्यथा सुनाता।

2. गाता शुक जब किरण वसंती छूती अंग पर्ण से छनकर

उत्तर:- संदर्भ – प्रस्तुत काव्यपंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग – 1 में संकलित कविता 'गीत-अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी सिंह दिनकर है।

व्याख्या – जब सूरज की वासंती किरणें पत्तों से छनकर आती है और शुक के अंगों को छूती है तो वह प्रसन्न होकर गा उठता है।

3. हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर:- संदर्भ – प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग – 1 में संकलित कविता 'गीत-अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी सिंह दिनकर है।

व्याख्या – यहाँ पर जब प्रेमिका अपने प्रेमी के गीत को छिपकर सुनती है तो वह विधाता से यही कहती है कि काश वह भी इस गीत की कड़ी बन पाती।

*-प्रश्न-उत्तर :-

1: नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर: जब नदी किनारों से बातें करते हुए बह रही है तो किनारे पर एक गुलाब सोचने लगता है कि यदि भगवान से उसे बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी अपने सपनों के गीत सबको सुनाता। इससे संबंधित पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं:

2. जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:- शुक जब अपने खुशी को प्रदर्शित करने के लिए गीत गाता है तो उसका स्वर पूरे वन में गूँज उठता है। शुकी का मन भी उस समय गाने के लिए करता है परन्तु वह अपने वात्सल्य के कारण मौन रह जाती है। शुकी के पंख खुशी से फूल उठते हैं और वह इस मौन में भी अत्यधिक प्रसन्न हो उठती है।

3. प्रेमी जब गीत गाता है, तब प्रेमिका की क्या इच्छा होती है?

उत्तर:- प्रेमी जब साँझ के समय गीत गाता है तब उसकी प्रेमिका उसके गीत को सुनने के लिए घर से बाहर निकल पड़ती है और नीम के पेड़ के पीछे छिपकर अपने प्रेमी का मधुर गीत सुनने लगती है। उस समय प्रेमिका की इच्छा होती है कि काश वह भी इस गीत की पंक्ति बन जाती।

4. प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति-चित्रण को लिखिए।

उत्तर:- प्रथम छंद में कवि ने प्रकृति का सजीव चित्रण किया है। प्रथम छंद में नदी अपने वेग से बहती मानो किनारों से अपने दुःख को अभिव्यक्त करते बही जा रही है और वही पर तट पर खड़ा गुलाब का पौधा है जो मौन खड़ा है।

5: प्रकृति के साथ पशु पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: प्रकृति साथ पशु पक्षियों का गहरा संबंध है। पशु पक्षी प्रकृति के बिना जीवित नहीं रह सकते। प्रकृति ही उन्हें आवास प्रदान करती है और भोजन प्रदान करती है।

6: मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: मनुष्य को प्रकृति भिन्न रूपों में आंदोलित करती है। जब मनुष्य किसी कल कल बहती नदी को देखता है तो उसके संगीत में खो जाता है। जब मनुष्य हल्की बारिश देखता है तो उसमें सराबोर होना चाहता है। लेकिन जब तेज तूफान आता है तो मनुष्य उससे बचकर किसी सुरक्षित आसरे में चला जाता है।

7: सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: जब हमारी भावना हमारे होठों पर लयबद्ध तरीके से बाहर आती है तो उसे गीत कहते हैं। जब कोई भावना अंदर ही रहती है तो उसे अगीत कहते हैं। कभी कभी अगीत भी गीत बनकर स्फुटित हो उठता है।

8: 'गीत अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए।

उत्तर: इस कविता में मुखर भावना और छुपी भावना की तुलना की गई है। यह तुलना प्रकृति में छुपे अनेक सौंदर्य के सहारे की गई है। नदी के गाने की तुलना गुलाब के मौन रहने से की गई है। शुक के गाने की तुलना शुकी के मौन से की गई है। प्रेमी के गाने की तुलना प्रेमिका के मौन से की गई है। इस तरह से इस कविता में गीत और अगीत के माध्यम से प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी वर्णन है।

***-व्याख्यान-प्रश्न उत्तर:-**

1: अपने पतझर के सपनों का मैं जग को गीत सुनाता

उत्तर: ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें नदी की सुंदरता का वर्णन है। जब नदी गीत गाते हुए और किनारों से बातें करते हुए आगे बढ़ती है तो गुलाब चुपचाप यह सोचता है कि अगर भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी दुनिया को अपने सपनों के बारे में गा गाकर सुनाता।

2: गाता शुक जब किरण वसंती छूती अंग पर्ण से छनकर

उत्तर: ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें शुक और शुकी के प्रेम का वर्णन है। जब पत्तियों से छनकर आने वाली किरणें तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाने लगता है।

3: हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर: ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें प्रेमी और प्रेमिका का वर्णन है। जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रेमिका सोचती है कि कितना अच्छा होता यदि वह उस गीत का एक हिस्सा बन जाती।

***-निम्नलिखित उदाहारण में 'वाक्य-विचलन' को समझने का प्रयास कीजिए। इसी आधार पर प्रचलित वाक्य -विन्यास लिखिए –**

उदाहारण –

तट पर गुलाब सोचत

एक गुलाब तट पर सोचता है।

क) देते स्वर यदि मुझे विधाता

ख) बैठा शुक उस घनी डाल पर

ग) गूंज रहा शुक का स्वर वन में

घ) हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की

ङ) शुकी बैठ अंडे है सेती

उत्तर:-

वाक्य-विचलन	वाक्य-विन्यास
देते स्वर यदि मुझे विधाता	यदि विधाता मुझे स्वर देते।
बैठा शुक उस घनी डाल पर	शुक उस घनी डाल पर बैठा।
गूंज रहा शुक का स्वर वन में	शुक का स्वर वन में गूंज रहा।

संचयन-गद्य-भाग

पाठ-2

(स्मृति) (श्री राम शर्मा)

***-परिचय और सार:-**पं० श्रीराम शर्मा द्वारा रचित लेख 'स्मृति' एक संस्मरणात्मक लेख है, जो साहसिक एवं शिकार कथा पर आधारित है। यह पं० श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित 'शिकार' नामक पुस्तक से संकलित है जिसमें लेखक ने अपने बचपन की रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। सन् 1908 ई० में दिसंबर या जनवरी के महीने में शाम के साढ़े तीन या चार बजे जब लेखक अपने छोटे भाई के साथ झरबेरी से बेर तोड़कर खा रहा था, उन्हें (लेखक को) उनके बड़े भाई ने बुलवाया। लेखक पिटाई के भय से डर गया, परंतु भाई साहब ने लेखक को मक्खनपुर डाकखाने में पत्र डालने के लिए दिए जो बहुत आवश्यक थे। लेखक अपने छोटे भाई के साथ अपने-अपने डंडे लेकर व माँ के दिए चने लेकर चल दिए। लेखक ने पत्रों को अपनी टोपी में रख लिया क्योंकि उनके कुर्ते में जेबें न थी। मार्ग में दोनों भाई उस कुएँ के पास पहुँचे जो कच्चा था तथा जिसमें एक अतिभयंकर काला साँप था। प्रतिदिन लेखक व उसके मित्र कुएँ में ढेला फेंककर साँप की क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाते थे। आज भी लेखक के मन में साँप की फुसकार सुनने की इच्छा जाग्रत हुई। लेखक ने एक ढेला उठाया और एक हाथ से टोपी उतारकर कुएँ में गिरा दिया। लेखक के टोपी हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ जो टोपी में रखी थीं चक्कर काटती हुए कुएँ में गिर गई। निराशा व पिटने के भय से दोनों भाई कुएँ के पाट पर बैठकर रोने लगे। लेखक का मन करता कि माँ आकर गले लगाकर कहे कोई बात नहीं या घर जाकर झूठ बोल दे, परंतु लेखक झूठ बोलना नहीं जानता था तथा सच बताने पर उसे पिटाई का भय था, तब लेखक ने कुएँ मे घुसकर चिट्ठियाँ निकालने का दृढ़ निश्चय किया। लेखक ने अपनी व भाई की धोतियाँ तथा रस्सी बाँधी और रस्सी के एक सिरे पर डंडा बाँधकर कुएँ में डाल दिया तथा दूसरा सिरा कुएँ की डेंग से बाँध दिया और स्वयं धोती के सहारे कुएँ मे घुस गया। कुएँ में धरातल से चार-पाँच गज की ऊँचाई से लेखक ने देखा कि साँप उसका मुकाबला करने के लिए फन पैâलाकर तैयार था। लेखक को साँप को मारने व चिट्ठियाँ लेने के लिए कुएँ के धरातल पर उतरना ही था क्योंकि चिट्ठियाँ वहीं गिरी हुई थी। जैसे-जैसे लेखक नीचे उतरता वैसे-वैसे उसका चित्त एकाग्र होता जाता। कच्चे कुएँ का व्यास कम होता है इसलिए डंडा चलाने के लिए पर्याप्त स्थान न था। तभी लेखक ने साँप को न छेड़ने का निर्णय लिया। लेखक ने डंडे से चिट्ठियाँ सरकाने का प्रयास किया और साँप की फुसकार से लेखक के हाथ से डंडा छूट गया। लेखक ने दूसरा प्रयास किया और साँप डंडे से चिपट गया। डंडे के लेखक की ओर खिंच आने से साँप की मुद्रा बदल गई और लेखक ने लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए। लेखक ने चिट्ठियों को धोती से बाँध दिया, जिसे छोटे भाई ने ऊपर खींच लिया तथा डंडा उठाकर हाथों के सहारे ऊपर चढ़ गया। ऊपर आकर वह थोड़ी देर पड़ा

रहा तथा किशनपुर के जिस लड़के ने उसे ऊपर चढ़ते देखा था उसे कहा कि इस घटना के बारे में किसी से न कहे। सन 1915 में मैट्रीक्युलेशन उत्तीर्ण करने के बाद लेखक ने यह घटना अपनी माँ को बताई और माँ ने लेखक को अपनी गोद में छुपा लिया।

⁎-शब्दार्थ:-

1-आखिर-अंतिम
2-चिल्ला-कड़ी सर्दी
3-भुंजाना-भुनवाना
4-झरे-तोडना
5-दुधारी-दोनों तरफ धारवाली
6-आश्वासन-भरोसा
7-घटक-नुकसानदायक
8-सूझ-तरकीब
9-पैतरा-स्थिति
10-अवलंबन-सहारा
11-कायल-मानना
12-धौंकनी-तेज धडकना
13-वार-प्रहार-मार
14-डैने -पंख

⁎-प्रश्न-उत्तर:-

1. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर:- जब लेखक झरबेरी से बेर तोड़ रहा था तभी एक आदमी ने पुकार कर कहा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र चले आओ। यह सुनकर लेखक घर की ओर लौटने लगा। पर लेखक के मन में भाई साहब की मार का डर था। इसलिए वह सहमा-सहमा जा रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि उससे कौन-सा कसूर हो गया। उसे आशंका थी कि कहीं बेर खाने के अपराध में उसकी पेशी न हो रही हो। वह अज्ञात डर से डरते-डरते घर में घुसा।

2. मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

उत्तर:- मक्खनपुर पढ़ने जाने वाले बच्चों की टोली पूरी वानर टोली थी। उन बच्चों को पता था कि कुएँ में साँप रहता है। लेखक ढेला फेंककर साँप से फुसकार करवा लेना बड़ा काम समझता था। बच्चों में ढेला फेंककर फुसकार सुनने की प्रवृत्ति जाग्रत हो गई थी। कुएँ में ढेला फेंककर उसकी आवाज तथा उससे सुनने के बाद अपनी बोली सुनने की प्रतिध्वनि सुनने की लालसा उनके मन में रहती थी।

3. 'साँप ने फुफकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं' – यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर:- यह घटना १९०८ में घटी थी और लेखक ने इसे अपनी माँ को १९१५ में सात साल बाद बताया था। उन्होंने इसे लिखा तो और भी बाद में होगा। अतः उन्हें पूरी घटना का स्मरण नहीं।लेखक ने जब ढेला उठाकर कुएँ में साँप पर फेंका तब टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई। यह देखकर दोनों भाई घबरा गए और रोने लगे। लेखक को भाई की पिटाई का डर था।तब उन्हें माँ की गोद याद आ रही थी। अब वह और भी भयभीत हो गए थे। इस वजह से उन्हें यह बात अब याद नहीं कि 'साँप ने फुफकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं'।

4. **किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?**

उत्तर:- लेखक को चिट्ठियाँ बड़े भाई ने दी थी। डाकखाने जाते वक्त जैसे ही कुआँ सामने आया और लेखक ने ढेला उठाकर कुएँ में साँप पर फेंका तब टोपी में रखी चिट्ठियाँ कुएँ में गिर गई।यह देखकर दोनों भाई घबरा गए और रोने लगे। लेखक को भाई की पिटाई का डर सताने लगा था। अब वह और भी भयभीत हो गए थे। इसी मनःस्थिति में उसने कुएँ से चिट्ठियों को निकालने का निर्णय लिया।

5. साँप का ध्यान बाँटने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाई?

उत्तर:- साँप का ध्यान बाँटने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाई –

1. उसने डंडे से साँप को दबाने का ख्याल छोड़ दिया।
2. उसने साँप का फन पीछे होते ही अपना डंडा चिट्ठियों की ओर कर दिया और लिफाफा उठाने की चेष्टा की।
3. डंडा लेखक की ओर खीच आने से साँप का आसन बदल गया और लेखक ने तुरंत लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए और उन्हें अपनी धोती के छोर में बाँध लिया।

6. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- चिट्ठियाँ सूखे कुएँ में गिर पड़ी थीं। कुएँ में साँप था। कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ लाना बड़ा ही साहस का कार्य था। लेखक ने इस चुनौती का स्वीकार किया। लेखक ने छः धोतियों को जोड़कर डंडा बाँधा और एक सिरे को कुएँ में डालकर उसके दूसरे सिरे को कुएँ के चारों ओर घुमाने के बाद गाँठ लगाकर अपने छोटे भाई को पकड़ा दिया। लेखक इसी धोती के सहारे कुएँ में उतरा। जब वह धरातल के चार-पाँच गज उपर था, उसने साँप को फन फैलाए देखा। वह कुछ हाथ ऊपर धोती पकड़े लटका रहा ताकि वह उसके आक्रमण से बच जाए।

साँप को धोती पर लटककर मारना संभव नहीं था और डंडा चलाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। उसने डंडे से चिट्ठियों को खिसकाने का प्रयास किया कि साँप डंडे से चिपक गया। साँप का पिछला हिस्सा लेखक के हाथ को छू गया। लेखक ने डंडा फेंक दिया। डंडा लेखक की ओर खीच आने से साँप का आसन बदल गया और लेखक ने तुरंत लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए और उन्हें अपनी धोती के छोर में बाँध लिया।

7. इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?

उत्तर:- इस पाठ को पढ़ने के बाद निम्नलिखित बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है –

- बच्चे झरबेरी के बेर तोड़कर खाने का आनंद लेते हैं।
- स्कूल जाते समय रास्ते में शरारतें करते हैं।
- कठिन एंव जोखिम पूर्ण कार्य करते हैं।
- जानवरों एंव जीव-जन्तुओं को तंग करते हैं।
- कुएँ में ढेला फेंककर खुश होते हैं।
- माली से छिपकर फल तोड़ना पसंद करते हैं।
- गलत काम करने के बाद सज़ा मिलने से डरते हैं।

8. 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं'- का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- इस कथन का आशय है कि मनुष्य हर स्थिति से निपटने के लिए तरह-तरह के अनुमान लगता है और भावी योजनाएँ बनाता है। परंतु उसकी सारी योजनाएँ सफल नहीं होती। उसे कभी सफलता मिलती है तो कभी विफलता। इससे कई बार मनुष्य निराश हो जाता है। इस पाठ के लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के तरह तरह के अनुमान लगाए, योजनाएँ बनायीं और उसमे फेर-बदल भी करना पड़ा, अंततः उसे सफलता मिली।

9. 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' – पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- मनुष्य तो कर्म करता है, पर उसे फल देने का काम ईश्वर करता है। मनचाहे फल को पाना मनुष्य के बस की बात नहीं है। यह तो उस शक्ति पर ही निर्भर करता है जो फल देती है। इस पाठ के लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के तरह-तरह के अनुमान लगाए, योजनाएँ बनायीं और उसमे फेर-बदल भी करना पड़ा, अंततः उसे सफलता मिली। गीता में भी कर्म के महत्व को दर्शाया गया है-'
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'।

***-व्याकरण:-**

1-क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे क्रिया कहते है।

जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।

दूसरे शब्दों में - क्रिया का एक अर्थ कार्य करना होता है। जिन शब्दों या पदों से यह पता चले की कोई कार्य हो रहा है या किया जा रहा है उसे क्रिया कहते हैं।

1) पानी लाओ। (2) चुपचाप बैठ जाओ।
(3) रुको। (4) जाओ।

2) क्रिया का निर्माण धातू से होता है। जब धातू में ना लगा दिया जाता है, तब क्रिया बनती है।

3) **धातु -**
जिस मूल रूप से क्रिया को बनाया जाता है उसे धातु कहते है। यह क्रिया का ही एक रूप होता है। धातु को क्रिया का मूल रूप कहते हैं।

जैसे -खा + ना = खाना पढ़ + ना = पढ़ना
जा + ना = जाना लिख + ना = लिखना

संचयन-गद्य-भाग

पाठ-3

(कुल्लू कुम्हार की उनाकोठी)

(के विक्रम सिंह)

***-परिचय:-**keivkm ish ka jNm ÔØ m{,ÓÛÕÚ ko hAa| [Nhonepåriwk smy meA@yapk pd pr kam ikya | ifr srkarI n0krI keiviwNn 95o. me]Cc pdo. Pr kayRt rhe| [nkI +ic isnema A0r 3elivjn me4I| [sI kar` [Nhone [NhoneApnI n0krI 7oD_dI A0r isnema jgt sejD_g0-

*-पाठ का सार:-त्रिपुरा में कल्लू नाम का एक कुम्हार रहता था। वह शिव जी के साथ रहना चाहता था। भगवान शिव ने शर्त रखी कि उसे एक रात में शिव जी की एक करोड़ मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू जाने के लिए बहुत उत्सुक्त था इसलिए तुरंत मूर्तियाँ बनाने लगा।कल्लू कुम्हार की उनाकोटी में लेखक के. विक्रम सिंह ने अपनी यात्रा का वर्णन करा है। एक बार काम के सिलसिले में लेखक त्रिपुरा गए थे। वहाँ अपने कार्यक्रम के लिए उन्होंने अनेक स्थानों की यात्रा करी। उनाकोटी उन स्थानों में से एक था। लेखक ने इस स्थान का विशेष रूप से वर्णन करा है और बताया है कि वहाँ शिव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं।

त्रिपुरा में कल्लू नाम का एक कुम्हार रहता था। वह शिव जी के साथ रहना चाहता था। भगवान शिव ने शर्त रखी कि उसे एक रात में शिव जी की एक करोड़ मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू जाने के लिए बहुत उत्सुक्त था इसलिए तुरंत मूर्तियाँ बनाने लगा। परन्तु एक मूर्ति रह गयी और सुबह हो गई। इसलिए वह शिव जी के साथ नहीं जा सका और वहीं रह गया। उसी के नाम से त्रिपुरा के उस स्थान का नाम उनाकोटी पड़ा। उनाकोटी का अर्थ है एक करोड़ से एक कम। लेखक को यह स्थान बहुत रमणीय लगा। इस स्थान पर लेखक ने अपने कार्यक्रम की शूटिंग भी करी। इसके अतिरिक्त लेखक ने त्रिपुरा की संस्कृति, सभ्यता, धर्म, वहाँ का जन जीवन और जनजातियों के बारे में बताया है। त्रिपुरा बहुधार्मिक समाज का उदाहरण है। वहाँ पर लगातार बाहरी लोग आते रहे हैं। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसूचित जनजातियाँ हैं। वहाँ विश्व के चारों बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व मौजूद है। अगरतला के बाहरी हिस्से पैचारथल में एक सुंदर बौध मंदिर है। त्रिपुरा के उन्नीस कबीलों में से चकमा और मुघ महायानी बौध हैं। ये कबीले म्यांमार से आये थे। इस मंदिर की मुख्य बुद्ध प्रतिमा 1930 में रंगून से लाई गयी थी। टीलियामुरा में लेखक का परिचय समाज सेविका मंजू ऋषिदास और लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया से हुई। त्रिपुरा में अगरबत्ती बनाना, बाँस के खिलौने बनाना और गले में पहनने की मालायें बनाना आदि घरेलू उद्योग चलते हैं।

***-शब्दार्थ:-**

1-सोहबत-सांगत	2-ऊर्जादायी-शक्ति देनेवाला
3-खल-बाधा	4-कानफोड़ू-तेज आवाज
5-विक्षिप्त-पागल	6-तड़ित-बिजली
7-आवक-आना	8-इर्द-गिर्द -आस-पास
9-प्रतीकित-अभिव्यक्त	10-मुहँजोर-मूँह का तेज
11-विशेषज्ञता-विशेष जानकारी	12-इरादतन-जानबूझ के

13-कोटि-करोड़ 14-मिथक-पौराणिक कथा

***-प्रश्न-उत्तर :-**

1. 'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर:- उना का अर्थ है एक करोड़ से एक कम। उनाकोटी में शिव की कोटि से एक कम मूर्तियाँ हैं। त्रिपुरा में एक स्थान है 'उनाकोटी'। एक दंत कथा के अनुसार यहाँ शिव की एक करोड़ में एक मूर्ति कम है। इस कारण इसका नाम 'उनाकोटी' पड़ा।

2. पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- दंत कथा के अनुसार उनाकोटी में शिव की एक कोटि से एक कम मूर्तियाँ हैं। यहाँ पहाड़ी को काटकर शिव की विशाल आधार मूर्तियाँ बनी हैं। यहाँ भगीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा के अवतरण को चित्रित किया गया है कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा ले और लें और फिर धीरे-धीरे पृथ्वी पर बढ़ने दें। इससे गंगा का वेग घट गया। यही गंगा भागीरथी कहलाई।

3. कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ गया?

उत्तर:- उनाकोटी में हजारों मूर्तियाँ हैं। अभी तक इन मूर्तियों के निर्माता की पहचान नहीं हो पाई है। स्थानीय आदिवासियों का मानना है कि उनाकोटी की मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। वह पार्वती का भक्त था। वह शिव-पार्वती के साथ उनके निवास स्थान कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। पार्वती के जोर डालने पर शिवजी तैयार तो हो गए, पर उन्होंने एक शर्त रखी कि उसे एक रात में शिव की कोटि (एक करोड़) मूर्तियाँ बनानी होंगी। जब भोर हुई तो मूर्तियाँ एक कोटि से कम निकलीं। उना का अर्थ है एक करोड़ से एक कम। इस युक्ति से शिव को कल्लू से पीछा छुड़ाने का बहाना मिल गया। कल्लू को अपनी मूर्तियों के साथ उनाकोटी में ही छोड़ दिया और चलते बने। इस प्रकार कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से जुड़ गया।

4. 'मेरी रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई' – लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?

उत्तर:- लेखक के इस कथन के पीछे यह घटना जुड़ी है कि लेखक त्रिपुरा में शूटिंग करने में व्यस्त था। उसे सी.आर.पी.एफ. के जवान सुरक्षा प्रदान कर रहे थे। इन सुरक्षा कर्मियों ने लेखक का ध्यान निचली पहाडियों पर इरादतन रखे दो पत्थरों की तरफ खींचा। 'दो दिन पहले सेना एक जवान यहीं विद्रोहियों द्वारा मारा गया था' यह सुनकर लेखक की रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई।

5. त्रिपुरा 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण कैसे बना?

उत्तर:- त्रिपुरा में लगातार बाहरी लोग आते रहे। इससे यह बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बना है। यहाँ उन्नीस अनुसूचित जन जातियाँ और विश्व के चार बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व है। यहाँ बौद्ध धर्म भी माना जाता है। अगरतला के बाहरी हिस्से में एक सुंदर बौद्ध मंदिर है। यहाँ शिव की उपासना की जाती है।

6. टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

उत्तर:- टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय समाज सेविका मंजु ऋषिदास और लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया नामक हस्तियों से हुआ।

मंजु ऋषिदास रेडियो कलाकार के अतिरिक्त नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करती थीं। वे

निरक्षर थीं, पर उन्हें अपने वार्ड की सबसे बड़ी आवश्यकता अर्थात् स्वच्छ पेयजल की पूरी जानकारी थी। उन्होंने वार्ड में नल लगवाने, नल का पानी पहुँचाने और गलियों में ईंटें बिछवाने के लिए कार्य किया था।

7. कैलासशहर के ज़िलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी?

उत्तर:- लेखक ने उत्तरी त्रिपुरा ज़िले के मुख्यालय कैलासशहर के जिलाधिकारी से मुलाकात की। जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को यह जानकारी दी कि आलू की बुआई के लिए आमतौर पर पारंपरिक आलू के बीजों की ज़रूरत दो मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर पड़ती है। इसके बरक्स टी .पी . एस की सिर्फ १०० ग्राम मात्रा ही एक हेक्टेयर की बुआई के लिए काफ़ी होती है। त्रिपुरा की टी .पी .एस का निर्यात अब न सिर्फ असम, मिजोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश को बल्कि बांग्लादेश, मलेशिया और वियतनाम को भी किया जा रहा है।

8. त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए?

उत्तर:- त्रिपुरा में आलू की खेती के साथ-साथ अनेकों घरेलू उद्योग चलते हैं; जैसे – अगरबत्ती बनाना, बाँस के खिलौने बनाना, गले में पहनने की मालाएँ बनाना, अगरबत्ती के लिए सीकों को तैयार किया जाता है। यह गुजरात और कर्नाटक भेजी जाती है। अन्य घरेलू उद्योगों में माचिस, साबुन, प्लास्टिक, जूते, कपड़े आदि के घरेलू उद्योग सर्वप्रसिद्ध हैं।

व्याकरण:-

मुहावरे और लोकोक्ति का अर्थ :- (1) मुहावरा—मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—'अभ्यास'। हिन्दी में यह शब्द रूढ़ हो गया है, जिसका अर्थ है—"लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य, जो किसी एक ही बोली या लिखी जानेवाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो।"संक्षेप में ऐसा वाक्यांश, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, मुहावरा कहलाता है। इसे 'वाग्धारा' भी कहते हैं।

(2) लोकोक्ति-यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—'लोक' + 'उक्ति', अर्थात् किसी क्षेत्र-विशेष में कही हुई बात। इसके अन्तर्गत किसी कवि की प्रसिद्ध उक्ति भी आ जाती है। लोकोक्ति किसी प्रासंगिक घटना पर आधारित होती है। समाज के प्रबुद्ध साहित्यकारों, कवियों आदि द्वारा जब किसी प्रकार के लोक-अनुभवों को एक ही वाक्य में व्यक्त कर दिया जाता है तो उनको प्रयुक्त करना सुगम हो जाता है। ये वाक्य अथवा लोकोक्तियाँ (कहावतें, सूक्ति) गद्य एवं पद्य दोनों में ही देखने को मिलते हैं। इस प्रकार ऐसा वाक्य, कथन अथवा उक्ति, जो अपने विशिष्ट अर्थ के आधार पर संक्षेप में ही किसी सच्चाई को प्रकट कर सके, 'लोकोक्ति' अथवा 'कहावत' कही जाती है।

अँगूठी का नगीना-अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति अथवा वस्तु।
अकबर के नवरत्नों में बीरबल तो जैसे अंगूठी का नगीना थे।

अंग-अंग फूले न समाना-अत्यधिक प्रसन्न होना। राम के अभिषेक की बात सुनकर कौशल्या का अंग-अंग फूले नहीं समाया।

अंन्धी सरकार—विवेकहीन शासन।
कालाबाजारी खूब फल-फूल रही है, किन्तु अन्धी सरकार उन्हीं का पोषण करने में लगी है।

अन्धे की लाठी लकड़ी.होना-एकमात्र सहारा होना। निराशा में प्रतीक्षा अन्धे की लाठी है।

अक्ल का अन्धा-मूर्ख।
वह लड़का तो अक्ल का अन्धा है, उसे कितना ही समझाओ, मानता ही नहीं है।

इधर की उधर लगाना-चुगली करना।
अनेक लोग ऐसे होते हैं, जो इधर की उधर लगाकर लोगों में विवाद कराते रहते हैं।

ईंट से ईंट बजाना-हिंसा का करारा जवाब देना, खुलकर लड़ाई करना।
तुम मुझको कमजोर मत समझो, समय आने पर मैं ईंट से ईंट बजाने के लिए भी तैयार हूँ।

उड़ती चिड़िया पहचानना-दूर से भाँप लेना।
दारोगा ने सिपाही से कहा, "ऐसा अनाड़ी नहीं हूँ, उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ।"

ऊँट के मुँह में जीरा-बहुत कम मात्रा में कोई वस्तु देना।
मोहन प्रतिदिन दस रोटियाँ खाता है, उसे दो रोटियाँ देना तो ऊँट के मुँह में जीरा देने के समान है।

उल्टी गंगा बहाना—परम्परा के विपरीत काम करना।
सदैव उल्टी गंगा बहाकर समाज में वैचारिक क्रान्ति नहीं लाई जा सकती।

एक अनार सौ बीमार-एक वस्तु के लिए बहुत-से व्यक्तियों द्वारा प्रयत्न करना।
मेरे पास पुस्तक एक है और माँगनेवाले दस छात्र हैं। यह तो वही बात हुई कि एक अनार सौ बीमार।

कमर टूटना–हिम्मत पस्त होना।
पहले तो रमेश के पिताजी का स्वर्गवास हो गया और अब व्यापार में हानि होने से उसकी कमर टूट गई।

लोकोक्तियाँ और उनके अर्थ –

-अन्त बुरे का बुरा-बुरे का परिणाम बुरा होता है।
-अन्धों में काना राजा-मुखो के समाज में कम ज्ञानवाला भी सम्मानित होता है।
-उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे-अपना दोष स्वीकार न करके उल्टे पूछनेवाले पर आरोप लगाना।

-एक तो करेला, दूसरे नीम चढ़ा-अवगुणी में और अवगुणों का आ जाना।

-घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने-झूठी शान दिखाना।

-तुम डाल-डाल हम पात-पात-प्रतियोगी से अधिक चतुर होना। अथवा प्रतियोगी की प्रत्येक चाल को विफल करने का उपाय ज्ञात होना।

-मुँह में राम बगल में छुरी-कपटपूर्ण व्यवहार।